11P/268/1 Question Booklet No. 12

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No. [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

Roll No. (Write the digits in words) ....

Serial No. of Answer Sheet ....

Day and Date .... (Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only ***blue/black ball-point pen*** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall ***except the Admit Card without its envelope.***
3. ***A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.***
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space prvided above.
5. ***On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Qvestion Booklet Number and the Set Number in appropriate places.***
6. ***No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Queston Booklet.***
7. ***Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.***
8. ***Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.***
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only OMR ***Answer Sheet*** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages : 10 *[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]*

No. of Questions : 150

प्रश्नों की संख्या : 150

11P/268/1

Time : 2 Hours ***Full Marks : 450***

समय : 2 घण्टे ***पूर्णांक : 450***

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. ***One mark will be deducted for each incorrect answer***. Zero mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3 (तीन)** अंक का है। ***प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा।*** प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक ***शून्य*** होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

1. णमोकार मन्त्र किस ग्रन्थ का मंगलाचरण है–
(1) समयसार (2) षट्खण्डागम (3) तत्त्वार्थसूत्र (4) आप्तमीमांसा

2. 'समयसार' के रचयिता हैं–
(1) आचार्य उमास्वामी (2) आचार्य समन्तभद्र (3) आचार्य कुंदकुंद (4) आचार्य अकलंक

3. 'गोम्मट्टसार' के रचयिता हैं–
(1) आचार्य हरिभद्र (2) आचार्य नेमिचन्द्र (3) आचार्य यतिवृषभ (4) आचार्य कुंदकुंद

4. सात तत्त्वों में कौन–सा नहीं है–
(1) बंध (2) संवर (3) निर्जरा (4) पुद्गल

5. कौन–सा ग्रन्थ कुन्दकुन्दाचार्य द्वारा लिखित नहीं है–
(1) नियमसार (2) प्रवचनसार (3) समयसार (4) गोम्मट्टसार

6. रत्नत्रय में किसकी गणना नहीं होती–
(1) सम्यग्दर्शन (2) सम्यग्ज्ञान (3) सम्यग्चारित्र (4) सम्यक् तप

7. दशलक्षण धर्मों में सर्वप्रथम आता है–
(1) उत्तम तप (2) उत्तम ब्रह्मचर्य (3) उत्तम क्षमा (4) उत्तम आर्जव

8. जैनों के शाश्वत तीर्थक्षेत्र का नाम है–
(1) तिजारा (2) अहिच्छत्र (3) सम्मेदशिखर (4) जम्बूद्वीप

9. तीर्थंकर ऋषभदेव की जन्मभूमि है–
(1) अयोध्या (2) बिहार (3) वाराणसी (4) मथुरा

10. तेईसवें तीर्थंकर का नाम है–
(1) अजितनाथ (2) सम्भवनाथ (3) नेमिनाथ (4) पार्श्वनाथ

11. सिंह किस तीर्थंकर का चिह्न है–
(1) चन्द्रप्रभ (2) महावीर स्वामी (3) शीतलनाथ (4) नमिनाथ

12. आद्य जैन संस्कृत–सूत्र–ग्रन्थ के प्रणेता हैं–
(1) आचार्य उमास्वामी (2) आचार्य शिवकोटि (3) आचार्य समन्तभद्र (4) आचार्य कुंदकुंद

13. पाँच अस्तिकायों में किसकी गणना नहीं होती–
(1) आकाश (2) काल (3) पुद्गल (4) जीव

14. सम्यग्ज्ञान कितने होते हैं–
(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पाँच

15. पुद्गल द्रव्य में नहीं पाया जाता है–
(1) स्पर्श (2) रस (3) गन्ध (4) चैतन्य

16. जैनदर्शन में द्रव्य कितने प्रकार के माने गये हैं–
(1) चार (2) पाँच (3) छः (4) सात

17. अनुयोग कितने माने गये हैं–
(1) दो (2) तीन (3) चार (4) पाँच

18. नैगमादि नयों की संख्या कितनी है–
(1) चार (2) पाँच (3) छः (4) सात

19. जैनदर्शन में प्रमाण के मूल भेद माने हैं–
(1) एक (2) दो (3) तीन (4) चार

20. जैनों की रामायण कहलाता है–
(1) पद्मपुराण (2) आदिपुराण (3) उत्तरपुराण (4) हरिवंशपुराण

21. 'तत्त्वार्थसूत्र' किस भाषा में रचित है–
(1) हिन्दी (2) संस्कृत (3) प्राकृत (4) अपभ्रंश

22. भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव है–
(1) होली (2) दीपावली (3) अनन्त चतुर्दशी (4) रक्षाबन्धन

23. सभी संसारी जीवों में कौन–सा ज्ञान होता है–
(1) मनःपर्याय ज्ञान (2) अवधिज्ञान (3) मतिज्ञान (4) केवलज्ञान

24. शास्त्रों के ज्ञान को कौन–सा ज्ञान कहते हैं–
(1) श्रुतज्ञान (2) मनःपर्ययज्ञान (3) मतिज्ञान (4) अवधिज्ञान

25. इन्द्रियों की सहायता से होने वाला ज्ञान है–
(1) मतिज्ञान (2) केवलज्ञान (3) मनःपर्यय ज्ञान (4) अवधिज्ञान

26. जिनवाणी की उपासना का प्रमुख पर्व है–
(1) अष्टाह्निका (2) दशलक्षण (3) श्रुतपंचमी (4) दीपावली

27. भगवान महावीर के पश्चात् केवलज्ञान हुआ था–
(1) गौतम गणधर (2) भद्रबाहु आचार्य (3) आचार्य समन्तभद्र (4) बाहुबली

28. 'छहढाला' के रचयिता हैं–
(1) पं. टोडरमल (2) पं. बनारसीदास (3) पं. भूधरदास (4) पं. दौलतराम

29. दिगम्बर परम्परा में सर्वप्रथम द्वादशांग का लेखन प्रारंभ किया–
(1) आचार्य उमास्वामी ने (2) आचार्य पुष्पदन्त ने (3) आचार्य जिनसेन ने (4) आचार्य कुन्दकुन्द ने

30. जैनन्याय के प्रमुख आचार्य हैं–
(1) आचार्य अकलंक (2) आचार्य कुन्दकुन्द (3) आचार्य उमास्वामी (4) आचार्य नेमिचन्द्र

31. मतिज्ञान के भेद हैं–
(1) चार (2) पाँच (3) छः (4) सात

32. जैनदर्शन का दूसरा नाम है–
(1) श्रमणदर्शन (2) सुगतदर्शन (3) सांख्यदर्शन (4) औलूक्यदर्शन

33. समयसार के संस्कृत–टीकाकार हैं–
(1) अमृतचन्द्राचार्य (2) विद्यानन्दि आचार्य (3) उमास्वामी आचार्य (4) अकलंक आचार्य

34. भगवान पार्श्वनाथ से सम्बन्धित तीर्थक्षेत्र है–
(1) हस्तिनापुर (2) श्रीमहावीरजी (3) अयोध्या (4) अहिक्षेत्र

35. श्रवणबेलगोला किस भगवान की मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है–
(1) महावीर स्वामी (2) बाहुबली भगवान (3) पार्श्वनाथ (4) चन्द्रप्रभ

36. भरत चक्रवर्ती किसके पुत्र थे–
(1) ऋषभदेव (2) बाहुबली (3) राजा सिद्धार्थ (4) नाभिराय

37. श्रावक के मूल गुण माने गये हैं–
(1) पाँच (2) छः (3) दस (4) आठ

38. क्रोध, मान, माया, लोभ – ये चार किसके भेद हैं–
(1) तप (2) व्रत (3) मिथ्यात्व (4) कषाय

39. आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों की भाषा है–
(1) शौरसेनी प्राकृत (2) अर्द्धमागधी प्राकृत (3) पैशाची प्राकृत (4) महाराष्ट्री प्राकृत

40. अजीव तत्त्व के भेद हैं–
(1) तीन (2) चार (3) पाँच (4) छः

41. प्रथमानुयोग का ग्रन्थ है–
(1) समयसार (2) आप्तमीमांसा (3) तत्त्वार्थसूत्र (4) हरिवंशपुराण

42. प्रमुख रूप से नयों का वर्णन करने वाली कृति है–
(1) नयचक्र (2) पद्मपुराण (3) रत्नकरण्डश्रावकाचार (4) स्याद्वादमंजरी

43. जैन–व्याकरण–ग्रन्थ का नाम है–
(1) समयसार (2) परीक्षामुख (3) प्रमेयकमलमार्तण्ड (4) कातन्त्र

44. 'धूर्ताख्यान' नामक व्यंग्य–कथा के लेखक हैं–
(1) श्रुतसागरसूरि (2) गुणभद्रसूरि (3) हेमचन्द्रसूरि (4) हरिभद्रसूरि

45. पंचपरमेष्ठी में से शरीर–रहित हैं–
(1) आचार्य (2) उपाध्याय (3) सिद्ध (4) अरिहंत

46. कौन सा दर्शन वैदिक दर्शन नहीं है–
(1) बौद्ध दर्शन (2) मीमांसा दर्शन (3) वैशेषिक दर्शन (4) वेदान्त दर्शन

47. कौन सा दर्शन वैदिक है–
(1) चार्वाक दर्शन (2) जैन दर्शन (3) बौद्ध दर्शन (4) मीमांसा दर्शन

48. कौन सा दर्शन नास्तिक है–
(1) योग दर्शन (2) नैयायिक दर्शन (3) चार्वाक दर्शन (4) मीमांसा दर्शन

49. जैनों का एक सम्प्रदाय है–
(1) पीताम्बर (2) दिगम्बर (3) राधा स्वामी (4) माध्यमिक

50. जैनों का एक तीर्थ है–
(1) वैष्णो देवी मन्दिर (2) गिरनार पर्वत (3) बिड़ला मन्दिर (4) अमरनाथ जी

51. जैनों का एक ग्रन्थ है–
(1) षट्खण्डागम (2) बाइबिल (3) कुरान (4) श्रीमद्भागवत

52. अन्धकार और प्रकाश पर्याय हैं–
(1) जीव की (2) पुद्गल की (3) आकाश की (4) काल की

53. एक प्रदेशी द्रव्य है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) काल

54. अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा– किस ज्ञान के भेद हैं–
(1) मतिज्ञान (2) श्रुतज्ञान (3) अवधिज्ञान (4) मनःपर्ययज्ञान

55. दिगम्बर आगम–ग्रन्थों की मुख्य भाषा है–
(1) मागधी (2) अर्धमागधी (3) शौरसेनी (4) महाराष्ट्री

56. ऋषभदेव की निर्वाण भूमि है–
(1) बिहार (2) कैलाश पर्वत (3) सम्मेदशिखर (4) पावापुरी

57. णमोकार मन्त्र में किसको नमस्कार किया गया है–
(1) गणेशजी (2) शिवजी (3) पंचपरमेष्ठी (4) भरत चक्रवर्ती

58. नैगमादि नयों के भेद हैं–
(1) पाँच (2) सात (3) आठ (4) नौ

59. महावीर भगवान का प्रथम उपदेश हुआ–
(1) कैलाश पर्वत पर (2) राजगृही में (3) वाराणसी में (4) सम्मेदशिखर

60. जैनों का प्रमुख आध्यात्मिक ग्रन्थ है–
(1) गोम्मट्टसार (2) तिलोयपण्णत्ति (3) समयसार (4) तत्त्वार्थसूत्र

61. कौनसा ग्रन्थ नेमिचन्द्राचार्य द्वारा लिखित नहीं है–
(1) गोम्मट्टसार (2) लब्धिसार (3) द्रव्यसंग्रह (4) प्रवचनसार

62. अक्षय तृतीया पर्व किस तीर्थंकर के आहार से सम्बन्धित है–
(1) पार्श्वनाथ (2) चन्द्रप्रभ (3) महावीर (4) ऋषभदेव

63. भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि है–
(1) अयोध्या (2) वैशाली (3) वाराणसी (4) मथुरा

64. जैनधर्म का प्रमुख सिद्धान्त है–
(1) अद्वैतवाद (2) शून्यवाद (3) स्याद्वाद (4) क्षणिकवाद

65. आदिनाथ भगवान का चिह्न है–
(1) बैल (2) सर्प (3) चन्द्र (4) सिंह

66. 'द्रव्यसंग्रह' किस अनुयोग का ग्रन्थ है–
(1) प्रथमानुयोग (2) करणानुयोग (3) चरणानुयोग (4) द्रव्यानुयोग

67. 'मूलाचार' किस अनुयोग का ग्रन्थ है–
(1) प्रथमानुयोग (2) करणानुयोग (3) चरणानुयोग (4) द्रव्यानुयोग

68. गुणस्थान होते हैं–
(1) ग्यारह (2) बारह (3) तेरह (4) चौदह

69. 'सर्वार्थसिद्धि' किस ग्रन्थ की टीका है–
(1) तत्त्वार्थसूत्र (2) सन्मतिसूत्र (3) परीक्षामुख (4) समयसार

70. लोक को अनादिनिधन और अकृत्रिम मानने वाला दर्शन है–
(1) जैन दर्शन (2) न्याय दर्शन (3) वैशेषिक दर्शन (4) योग दर्शन

71. छः द्रव्यों में से एक है–
(1) जीव (2) आस्रव (3) बन्ध (4) शौच

72. कौनसा द्रव्य अस्तिकाय नहीं है–
(1) काल द्रव्य (2) जीव द्रव्य (3) आकाश द्रव्य (4) धर्म द्रव्य

73. एकेन्द्रिय जीव है–
(1) वृक्ष (2) चींटी (3) सर्प (4) मनुष्य

74. सर्प चिह्न है–
(1) आदिनाथ का (2) चन्द्रप्रभ का (3) पार्श्वनाथ का (4) नेमिनाथ का

75. वैशाली किसकी जन्मभूमि है–
(1) महावीर की (2) चन्द्रप्रभ की (3) पार्श्वनाथ की (4) नेमिनाथ की

76. वर्धमान किस तीर्थंकर का दूसरा नाम है–
(1) महावीर का (2) चन्द्रप्रभ का (3) पार्श्वनाथ का (4) नेमिनाथ का

77. 'आदिनाथ' किस तीर्थंकर को कहते हैं–
(1) शीतलनाथ को (2) ऋषभदेव को (3) पार्श्वनाथ को (4) महावीर को

78. तीर्थंकरों की उपदेश–सभा को कहते हैं–
(1) समवसरण (2) स्वर्ग (3) मध्यलोक (4) जम्बूद्वीप

79. मूर्तिक द्रव्य कौन सा है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) पुद्गल

80. सभी द्रव्यों के गमन में निमित है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) पुद्गल

81. सभी द्रव्यों को अवगाहन देता है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) पुद्गल

82. वनस्पति जीव है–
(1) एकेन्द्रिय (2) द्वीन्द्रिय (3) त्रीन्द्रिय (4) पंचेन्द्रिय

83. आत्मा का सभी कर्मों से रहित होना कहलाता है–
(1) बन्ध (2) आस्रव (3) निर्जरा (4) मोक्ष

84. जैनदर्शन में इन्द्रियाँ मानी गई हैं–
(1) बीस (2) पाँच (3) दस (4) पन्द्रह

85. बारह भावनाओं में से एक का नाम है–
(1) क्षमा (2) अनित्य (3) सम्यग्दर्शन (4) मोक्ष

86. दस धर्मों में से एक है–
(1) सत्य (2) परिग्रह (3) अनित्य (4) आस्रव

87. सभी द्रव्यों के परिणमन में निमित्त है–
(1) जीव (2) पुद्गल (3) आकाश (4) काल

88. स्वर्ग–नरक एवं पुण्य–पाप को नहीं मानता है–
(1) जैन दर्शन (2) चार्वाक दर्शन (3) मीमांसा दर्शन (4) न्याय दर्शन

89. हेय तत्त्व है–
(1) जीव तत्त्व (2) मोक्ष तत्त्व (3) निर्जरा तत्त्व (4) आस्रव तत्त्व

90. आत्मा में कर्मों का आगमन कहलाता है–
(1) बन्ध (2) आस्रव (3) संवर (4) निर्जरा

91. तत्त्वार्थ का श्रद्धान है–
(1) सम्यग्दर्शन (2) सम्यग्ज्ञान (3) सम्यक्चारित्र (4) सम्यक्तप

92. संशय विपर्यय अनध्यवसाय से रहित तत्त्वों का ज्ञान है–
(1) सम्यग्दर्शन (2) सम्यग्ज्ञान (3) सम्यक्चारित्र (4) सम्यक्तप

93. सम्पूर्ण पदार्थों को एक साथ प्रत्यक्ष जानता है–
(1) मतिज्ञान (2) श्रुतज्ञान (3) अवधिज्ञान (4) केवलज्ञान

94. मुनिसंघ में अध्ययन–अध्यापन कराते हैं–
(1) अरिहन्त (2) सिद्ध (3) साधु (4) उपाध्याय

95. 'आचार्य गृद्धपिच्छ' भी कहलाते हैं–
(1) आचार्य अकलंक (2) आचार्य उमास्वामी (3) आचार्य नेमिचन्द्र (4) आचार्य प्रभाचन्द्र

96. कौन सा द्रव्य सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है–
(1) जीव (2) पुद्गल (3) आकाश (4) काल

97. पशु–पक्षी किस गति के जीव हैं–
(1) मनुष्यगति (2) देवगति (3) तिर्यंचगति (4) नरकगति

98. प्रत्यक्ष प्रमाण का एक उपभेद है–
(1) अनुमान (2) आगम (3) प्रत्यभिज्ञान (4) केवलज्ञान

99. प्रथम गुणस्थान का नाम है–
(1) मिथ्यात्व (2) सम्यक्त्व (3) प्रमत्तसंयत (4) सयोगकेवली

100. 'छहढाला' के लेखक हैं–
(1) भूधरदास (2) दौलतराम (3) बनारसीदास (4) टोडरमल

101. 'समयसार' में 'समय' का मुख्य अर्थ है–
(1) आत्मा (2) आस्रव (3) बन्ध (4) ब्रह्मचर्य

102. 'अनेकान्त' पत्रिका निकलती है–
(1) दिल्ली से (2) इन्दौर से (3) कोलकाता से (4) मुम्बई से

103. भगवान महावीर की माता का नाम है–
(1) मरुदेवी (2) त्रिशलादेवी (3) वामादेवी (4) इन्द्राणी

104. भगवान महावीर की निर्वाण भूमि है–
(1) पावापुरी (2) सम्मेदशिखर (3) कैलाश पर्वत (4) गिरनार

105. जैन न्याय का प्रमुख ग्रन्थ है–
(1) समयसार (2) पद्मपुराण (3) द्रव्यसंग्रह (4) न्यायदीपिका

106. जैनों का सर्वमान्य संकलित ग्रन्थ है–
(1) समणसुत्तं (2) आचारांग (3) सूत्रकृतांग (4) समयसार

107. जैन आगमों की मूल भाषा है–
(1) पालि (2) प्राकृत (3) संस्कृत (4) अपभ्रंश

108. सर्व कर्मों से रहित परमेष्ठी हैं–
(1) अरिहंत (2) सिद्ध (3) आचार्य (4) उपाध्याय

109. दिव्यध्वनि द्वारा उपदेश देते हैं–
(1) अरिहंत (2) सिद्ध (3) आचार्य (4) उपाध्याय

110. रत्नत्रय में गर्भित नहीं होता है–
(1) सम्यग्दर्शन (2) सम्यग्ज्ञान (3) सम्यक्चारित्र (4) सम्यक्तप

111. एक ही वस्तु में परस्पर विरुद्ध धर्मों का पाया जाना है–
(1) अहिंसा (2) अनेकान्त (3) अपरिग्रह (4) ब्रह्मचर्य

112. पाँच व्रतों में नाम नहीं आता–
(1) अहिंसा (2) अपरिग्रह (3) ब्रह्मचर्य (4) क्षमा

113. शत्रु को पीड़ित करना कहलाता है–
(1) संकल्पी (2) आरम्भी (3) उद्योगी (4) विरोधी

114. व्यापारजनित हिंसा को कहते हैं–
(1) संकल्पी (2) आरम्भी (3) विरोधी (4) उद्योगी

115. भोजनादि गृहकार्यों से होने वाली हिंसा को कहते हैं–
(1) संकल्पी (2) आरम्भी (3) विरोधी (4) उद्योगी

116. 'नियमसार' के लेखक हैं–
(1) कुन्दकुन्द (2) अमृतचन्द्र (3) समन्तभद्र (4) पूज्यपाद

117. 'प्रमेयरत्नमाला' किस ग्रन्थ की टीका है–
(1) परीक्षामुखसूत्र (2) तत्त्वार्थसूत्र (3) आचारांगसूत्र (4) सन्मतिसूत्र

118. जैन तर्कभाषा के लेखक है–
(1) उपाध्याय यशोविजय (2) आचार्य उमास्वामी (3) आचार्य महाप्रज्ञ (4) आचार्य कुन्दकुन्द

119. आचार्य अमितगति द्वारा लिखित ग्रन्थ का नाम है–
(1) योगसार प्राभृत (2) अष्टपाहुड (3) भक्तिसंग्रह (4) मूलाचार

120. अनन्तप्रदेशी द्रव्य है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) काल

121. आचार्य मल्लिषेण द्वारा लिखित ग्रन्थ है–
(1) स्याद्वादमंजरी (2) परीक्षामुख (3) आप्तमीमांसा (4) आप्तपरीक्षा

122. नाग–नागिन को णमोकार मन्त्र सुनाया था–
(1) महावीर ने (2) पार्श्वनाथ ने (3) आदिनाथ ने (4) शांतिनाथ ने

123. गिरनार पर्वत से मोक्ष गये हैं–
(1) आदिनाथ (2) नेमिनाथ (3) पार्श्वनाथ (4) शांतिनाथ

124. चेतना किसका लक्षण है–
(1) जीव का (2) पुद्गल का (3) आकाश का (4) काल का

125. जैनों का विशेष पर्व है–
(1) ईद (2) ईस्टर (3) वैशाखी (4) दशलक्षण

126. णमोकार मन्त्र की भाषा है–
(1) संस्कृत (2) प्राकृत (3) पालि (4) अपभ्रंश

127. जैनधर्म में परमेष्ठी माने गये हैं–
(1) पाँच (2) दस (3) पन्द्रह (4) बीस

128. वर्द्धमान महावीर के पिता का नाम है–
(1) नाभिराय (2) विश्वसेन (3) गौतम (4) सिद्धार्थ

129. नव पदार्थों में गिना जाता हैं–
(1) क्षमा (2) ब्रह्मचर्य (3) संयम (4) संवर

130. 'सन्मतिं' अपर नाम है–
(1) आदिनाथ का (2) शांतिनाथ का (3) पार्श्वनाथ का (4) महावीर का

131. किस तीर्थंकर के पाँच नाम प्रसिद्ध हैं–
(1) आदिनाथ के (2) शांतिनाथ के (3) पार्श्वनाथ के (4) महावीर के

132. भगवान महावीर के समकालीन थे–
(1) गौतम बुद्ध (2) महात्मा ईसा (3) नारायण श्रीकृष्ण (4) मोहम्मद हजरत

133. 'तत्त्वार्थसूत्र' में अध्याय हैं–
(1) पांच (2) सात (3) आठ (4) दस

134. प्राकृत भाषा में रचित ग्रन्थ है–
(1) तत्त्वार्थसूत्र (2) न्यायदीपिका (3) प्रमेयरत्नमाला (4) नियमसार

135. **आकाश द्रव्य का उपकार है–**
(1) **गतिहेतुत्व** (2) **स्थितिहेतुत्व** (3) **परिणमनहेतुत्व** (4) अवगाहनहेतुत्व

136. अधर्मद्रव्य का उपकार है–
(1) गतिहेतुत्व (2) स्थितिहेतुत्व (3) परिणमनहेतुत्व (4) अवगाहन हेतुत्व

137. आत्मा में से कर्मों का आंशिक रूप से खिरना है–
(1) आस्रव (2) बन्ध (3) संवर (4) निर्जरा

138. पदार्थों का सामान्य अवलोकन है–
(1) दर्शनोपयोग (2) केवलज्ञान (3) अवधिज्ञान (4) सम्यक्चारित्र

139. दर्शन और ज्ञान – दोनों उपयोग एक साथ होते हैं–
(1) तिर्यंचों के (2) नारकियों के (3) देवों के (4) अरिहंतों के

140. लोकाकाश से बाहर भी पाया जाता है–
(1) जीव द्रव्य (2) पुद्गल द्रव्य (3) आकाश द्रव्य (4) काल द्रव्य

141. दर्शन और ज्ञान – ये दो भेद हैं–
(1) उपयोग के (2) पुद्गल के (3) प्रमाण के (4) नय के

142. जैनदर्शन के अनुसार जीव है–
(1) आकाश–प्रमाण (2) अणु–प्रमाण (3) लोक–प्रमाण (4) देह–प्रमाण

143. मक्खी जीव है–
(1) एकेन्द्रिय (2) द्वीन्द्रिय (3) त्रीन्द्रिय (4) चतुरिन्द्रिय

144. मन–सहित जीव होते हैं–
(1) एकेन्द्रिय (2) द्वीन्द्रिय (3) त्रीन्द्रिय (4) पंचेन्द्रिय

145. अन्धकार और प्रकाश पर्याय हैं–
(1) जीव की (2) पुद्गल की (3) आकाश की (4) काल की

146. एकप्रदेशी द्रव्य है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) काल

147. अनन्तप्रदेशी द्रव्य है–
(1) धर्म (2) अधर्म (3) आकाश (4) काल

148. पुण्य और पाप गिने जाते हैं–
(1) द्रव्यों में (2) तत्त्वों में (3) पदार्थों में (4) प्रमाणों में

149. ज्ञानावरणादि कर्म प्रकृतियां हैं–
(1) आठ (2) दस (3) पन्द्रह (4) बीस

150. व्रत, समिति, गुप्ति आदि से होता है–
(1) आस्रव (2) बन्ध (3) संवर (4) मोक्ष